

अंतर्नारी स्त्री. (तत्.) मनो. 1. पुरुष के अचेतन मन में विद्यमान उसकी नारी पक्ष की परिकल्पना 2. पुरुष के अंतर्मन में स्थित उसका नारी पक्ष अर्थात् कोमलता संवेदनशीलता आदि गुण जो प्रायः कवियों में अधिक देखने को मिलते हैं 3. पुरुष के स्वप्नों की नारी का प्रतीक स्वरूप।

अंतर्निक्षिप्त पुं. (तत्.) व्या. बीच में रखा गया, जोड़ा गया, वाक्य के बीच में जोड़ा गया कोई प्रासंगिक पद, वाक्यांश अथवा शब्द समूह जो व्याकरण की दृष्टि से अनावश्यक होते हुए भी अवांतर रूप से प्रयुक्त हुआ हो।

अंतर्निनाद पुं. (तत्.) ध्यानस्थ योगियों को सुषुम्ना नाड़ी के जाग्रत होने पर सुनाई पड़ने वाली हृदयाकाश एव ब्रह्मांड में व्याप्त विशेष ध्वनि, अनाहत नाद।

अंतर्निरीक्षण पुं. (तत्.) अपने अंदर झाँक कर अपने दोष देखने का प्रयत्न, आत्मनिरीक्षण, अंतर्दर्शन, आत्मविश्लेषण। introspection

अंतर्निलय पुं. (तत्.) 1. अंतः करण, हृदयागार, मानसपटल।

अंतर्निविष्ट वि. (तत्.) 1. दो अथवा अधिक वस्तुओं, स्थितियों, कालों आदि के बीच में जोड़ा गया, लाया गया या आया हुआ जैसे- फरवरी मास में प्रत्येक चौथे वर्ष में एक दिन अंतर्निविष्ट किया जाता है 2. अंतर्निष्ठ, अंदर स्थित, अंदर व्याप्त, अंतर्निहित, समाविष्ट।

अंतर्निविष्टि स्त्री. (तत्.) दो या अधिक वस्तुओं के बीच में जुड़ना, आना या पड़ना, प्रक्षेप, अंतर्निविष्ट होने का भाव।

अंतर्निवेशन पुं. (तत्.) (देश.) अंतर्निविष्टि।

अंतर्निष्ठ वि. (तत्.) अंदर समाया हुआ, अंदर व्याप्त, अंतर्निहित।

अंतर्निहित वि. (तत्.) 1. किसी के अंदर स्थित 2. सम्मिलित, समाविष्ट, शामिल।

अंतर्निहित वर्ण पुं. (तत्.) कला. दो रंगों का मिश्रण करने पर जो रंग ज्यादा उभर कर नहीं आता, दबा रह जाता है वह रंग, हल्का रंग।

अंतर्निहित स्वर पुं. (तत्.) शब्द के किसी अक्षर का वह स्वर जो उच्चरित नहीं होता, लेकिन लिखित रूप में उसकी उपस्थिति मान्य होती है जैसे- 'काल', 'मान' आदि शब्दों का अंतिम स्वर अ (जो उच्चरित नहीं होता)।

अंतर्नोद पुं. (तत्.) मनो. 1. जीव को सक्रियता की ओर अग्रसर करने वाली आंतरिक प्रवृत्ति, आंतरिक उत्साह 2. शारीरिक शक्तियों की गतिशील अवस्था।

अंतर्पट पुं. (तत्.) (सं.अंतःपट) 1. पर्दा 2. महाराष्ट्रादि कुछ प्रदेशों में विवाह-मंडप में वर एवं कन्या के बीच लगाया जाने वाला श्वेत वर्ण के वस्त्र से निर्मित पर्दा 2. उक्त प्रकार का पर्दा लगाने की वैवाहिक रीति का नाम।

अंतर्बोध पुं. (तत्.) आत्मज्ञान।

अंतर्भाव पुं. (तत्.) 1. मन में उद्भूत भाव जो अभी व्यक्त न हुआ हो। 2. एक का दूसरे या अन्य में समा जाना।

अंतर्भावना स्त्री. (तत्.) 1. हृदय की भावना, अंदर की भावना 2. मानसिक चिंतन 3. मनो. चित्त की एक विशेष प्रवृत्ति, किसी वस्तु विशेष को देखकर अथवा उसके विषय में सुनकर उसके साथ अंतः संवेदित होना।

अंतर्भावित वि. (तत्.) 1. अंदर अनुभव किया हुआ, अंतर्भूत, अंदर समाविष्ट 2. गुप्त रखा गया छिपाया हुआ, अंदर अनुभव किया हुआ परंतु अभिव्यक्त न किया गया।

अंतर्भुक्त वि. (तत्.) जो अपना पृथक् अस्तित्व समाप्त कर किसी वस्तु में पूरी तरह से एकाकार हो गया हो। तु. अंतर्भूत।

अंतर्भूत वि. (तत्.) जो अपना स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त किए बिना किसी वस्तु में समा गया हो, समाविष्ट, अंतर्गत।